Original Article
ISSN(Online): 3139-4434
https://ijeagr.com/

International Journal of Educational Analysis and Global Research
International Open Access, Peer-Reviewed, Refereed Journal
Volume 01, Issue 02, May 2026

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

साधना सिंह,[1] प्रो0 संदीप कुमार श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थिनी, बी.एड. विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
[2]शोध निर्देशक, प्रोफेसर/विभागाध्यक्ष (बी.एड. विभाग), श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
Email: sadhanasinghgkp16@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाया गया है। अध्ययन में गोरखपुर जनपद के 250 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु एस.के. मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली तथा ए.के.पी. सिन्हा एवं आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित समायोजन प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन में विद्यार्थियों, छात्रों तथा छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिए सहसम्बन्ध गुणांक (Correlation Coefficient) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार समस्त विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य 0.08, छात्रों में 0.06 तथा छात्राओं में 0.09 का निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ। ये सभी सहसम्बन्ध सांख्यिकीय दृष्टि से असार्थक पाए गए। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों, छात्रों एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकार की गईं। शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अध्ययन में सम्मिलित विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जिनका भविष्य में अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

मुख्य शब्द :– *माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी, संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन*

Received 05 May 2026
Accepted 15 May 2026
Published 20 May 2026

Corresponding Author:
साधना सिंह
Email: sadhanasinghgkp16@gmail.com

Doi: https://doi.org/10.64880/ijeagr.v1i2.06
Funding: This research received no specifics grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s). This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License.

OPEN ACCESS

प्रस्तावना

मानव जीवन में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित करना भी है। विद्यालयी जीवन में विद्यार्थी अनेक प्रकार की परिस्थितियों, चुनौतियों, सामाजिक संबंधों तथा भावनात्मक अनुभवों से गुजरते हैं। इन परिस्थितियों में सफलता प्राप्त करने के लिए केवल बौद्धिक क्षमता पर्याप्त नहीं होती, बल्कि भावनाओं को

समझने, नियंत्रित करने तथा उचित रूप से व्यक्त करने की क्षमता भी आवश्यक होती है। इसी क्षमता को संवेगात्मक बुद्धि कहा जाता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को अपनी भावनाओं एवं दूसरों की भावनाओं को समझने, उनका उचित प्रबंधन करने तथा सामाजिक संबंधों को प्रभावी ढंग से संचालित करने में सहायता प्रदान करती है। दूसरी ओर, समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करता है। विद्यालयी जीवन में विद्यार्थियों के लिए पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत क्षेत्रों में समायोजन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक संवेदनशील एवं परिवर्तनशील चरण है। इस अवस्था में किशोरावस्था का प्रारम्भ होता है, जिसके कारण शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक स्तर पर अनेक परिवर्तन देखने को मिलते हैं। विद्यार्थी नई परिस्थितियों, अपेक्षाओं तथा जिम्मेदारियों का सामना करते हैं। ऐसे समय में यदि उनमें संवेगात्मक बुद्धि का स्तर उच्च होता है, तो वे अपनी भावनाओं को संतुलित रखते हुए विभिन्न परिस्थितियों के साथ सफलतापूर्वक समायोजन स्थापित कर लेते हैं। इसके विपरीत, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी तनाव, चिंता, क्रोध, निराशा तथा सामाजिक संघर्ष जैसी समस्याओं का अधिक अनुभव करते हैं, जिससे उनके समायोजन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि की अवधारणा का विकास आधुनिक मनोविज्ञान में विशेष महत्व रखता है। यह व्यक्ति की भावनात्मक जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, सामाजिक कौशल तथा प्रेरणा जैसी क्षमताओं का समुच्चय है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी अपनी भावनाओं को पहचानता है, उन्हें उचित दिशा प्रदान करता है तथा नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित कर सकारात्मक व्यवहार अपनाता है। वह अपने सहपाठियों, शिक्षकों एवं परिवार के सदस्यों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने में सक्षम होता है। परिणामस्वरूप उसका सामाजिक एवं व्यक्तिगत समायोजन बेहतर होता है। समायोजन व्यक्ति की मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक सफलता का आधार माना जाता है। विद्यालयी परिवेश में समायोजन का आशय विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय, परिवार, मित्र समूह तथा समाज के साथ संतुलित संबंध स्थापित करने से है। जो विद्यार्थी उचित समायोजन स्थापित कर लेते हैं, वे शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते हैं, आत्मविश्वास से भरपूर होते हैं तथा जीवन की चुनौतियों का सामना सकारात्मक दृष्टिकोण से करते हैं। इसके विपरीत, असमायोजित विद्यार्थी अक्सर तनाव, अवसाद, अनुशासनहीनता, शैक्षिक पिछड़ापन तथा सामाजिक अलगाव जैसी समस्याओं का सामना करते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के मध्य घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। संवेगात्मक रूप से बुद्धिमान विद्यार्थी अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, जिसके कारण वे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संतुलित व्यवहार बनाए रखते हैं। उदाहरण के लिए, परीक्षा में अपेक्षित सफलता न मिलने पर उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी निराश होने के बजाय अपनी कमियों का विश्लेषण करता है और भविष्य में सुधार के लिए प्रयास करता है। वहीं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी असफलता को व्यक्तिगत कमजोरी मानकर तनाव और निराशा का शिकार हो सकता है।

विद्यालयी समायोजन के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी विद्यालय के नियमों का पालन करते हैं, शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध रखते हैं तथा सहपाठियों के साथ सहयोगात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। वे समूह कार्यों में सक्रिय रहते हैं तथा नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का स्तर निम्न होता है, वे विद्यालयी वातावरण में समायोजन स्थापित करने में कठिनाई अनुभव करते हैं, जिससे उनके शैक्षिक प्रदर्शन एवं सामाजिक संबंध प्रभावित हो सकते हैं।

पारिवारिक समायोजन पर भी संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम संस्था है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी परिवार के सदस्यों की भावनाओं को समझते हैं, उनका सम्मान करते हैं तथा पारिवारिक समस्याओं का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से करने का प्रयास करते हैं। वे माता–पिता एवं अन्य

सदस्यों के साथ स्वस्थ संबंध बनाए रखते हैं। इसके विपरीत, संवेगात्मक बुद्धि की कमी पारिवारिक संघर्ष, गलतफहमियों तथा तनावपूर्ण संबंधों को जन्म दे सकती है।

सामाजिक समायोजन भी संवेगात्मक बुद्धि से प्रभावित होता है। किशोरावस्था में मित्रों एवं सामाजिक समूहों का महत्व बढ़ जाता है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी सहानुभूति, सहयोग एवं संवेदनशीलता जैसे गुणों के कारण अपने साथियों के बीच लोकप्रिय होते हैं। वे दूसरों की भावनाओं को समझते हैं तथा सामाजिक परिस्थितियों में उचित व्यवहार करते हैं। परिणामस्वरूप वे स्वस्थ सामाजिक संबंध स्थापित करने में सफल होते हैं। दूसरी ओर, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में आक्रामकता, असहिष्णुता तथा सामाजिक संघर्ष की संभावना अधिक होती है।

व्यक्तिगत समायोजन के संदर्भ में भी संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी आत्म–जागरूक होते हैं और अपनी क्षमताओं एवं सीमाओं को पहचानते हैं। वे आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेते हैं तथा जीवन की चुनौतियों का सामना धैर्यपूर्वक करते हैं। उनमें आत्म–संतोष तथा मानसिक संतुलन की भावना अधिक होती है। इसके विपरीत, निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में आत्म–संदेह, चिंता, भय एवं तनाव की समस्याएँ अधिक पाई जाती हैं।

शैक्षिक उपलब्धि पर भी संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन का संयुक्त प्रभाव पड़ता है। जिन विद्यार्थियों का समायोजन स्तर अच्छा होता है तथा जिनमें संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, वे अध्ययन के प्रति अधिक प्रेरित रहते हैं। वे समय प्रबंधन, लक्ष्य निर्धारण एवं समस्या समाधान जैसी क्षमताओं का प्रभावी उपयोग करते हैं। परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत बेहतर होती है। इसके विपरीत, असमायोजित एवं संवेगात्मक रूप से कमजोर विद्यार्थी अध्ययन में रुचि खो सकते हैं तथा शैक्षिक उपलब्धि में पिछड़ सकते हैं।

वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन, सामाजिक दबाव तथा पारिवारिक अपेक्षाओं के कारण विद्यार्थियों के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उपस्थित हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल बौद्धिक विकास पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों के संवेगात्मक विकास पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है। विद्यालयों में ऐसी गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए जो विद्यार्थियों में आत्म–जागरूकता, आत्म–नियंत्रण, सहानुभूति, संचार कौशल एवं तनाव प्रबंधन जैसी क्षमताओं का विकास करें। इससे उनका समायोजन स्तर बेहतर होगा तथा वे जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन भावी शोधार्थियों को दिशा प्रदान करेगा। आज का युग तीव्र प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विकास, सामाजिक परिवर्तन तथा बढ़ती मानसिक चुनौतियों का युग है। ऐसे परिवेश में विद्यार्थियों के समक्ष केवल शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के साथ संतुलित एवं प्रभावी ढंग से समायोजन स्थापित करना भी अत्यंत आवश्यक है। समायोजन व्यक्ति की वह क्षमता है जिसके माध्यम से वह अपने वातावरण, परिवार, विद्यालय, मित्रों तथा समाज के साथ संतुलित संबंध स्थापित करता है और अपनी आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करता है। यदि विद्यार्थी उचित समायोजन नहीं कर पाते हैं, तो उनमें तनाव, चिंता, असंतोष, आक्रोश, अवसाद तथा व्यवहार संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

संवेगात्मक बुद्धि एक ऐसी मनोवैज्ञानिक अवधारणा है जो व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने, अभिव्यक्त करने तथा उनका उचित उपयोग करने की क्षमता को दर्शाती है। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाला विद्यार्थी अपनी भावनाओं को संतुलित रखता है, तनावपूर्ण परिस्थितियों में धैर्य बनाए रखता है तथा दूसरों के साथ सकारात्मक

संबंध स्थापित करने में सक्षम होता है। इसके विपरीत निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में कठिनाई होती है, जिसके कारण उनके सामाजिक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत समायोजन में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। अतः यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उनके समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करती है।

माध्यमिक स्तर किशोरावस्था का महत्वपूर्ण चरण होता है। इस अवस्था में विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा भावनात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन होते हैं। किशोरों को नई जिम्मेदारियों, सामाजिक अपेक्षाओं, शैक्षिक दबावों तथा व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस अवधि में अनेक विद्यार्थी पहचान संकट, आत्मसम्मान की समस्याओं, साथियों के दबाव तथा भविष्य की अनिश्चितताओं का अनुभव करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में यदि उनमें उच्च स्तर की संवेगात्मक बुद्धि होती है, तो वे इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं तथा बेहतर समायोजन स्थापित कर सकते हैं। इसलिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समय में विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यवहार संबंधी अनेक समस्याएँ देखने को मिल रही हैं, जैसे अनुशासनहीनता, आक्रामकता, तनाव, अवसाद, असामाजिक व्यवहार तथा अध्ययन के प्रति अरुचि। इन समस्याओं का एक प्रमुख कारण भावनात्मक असंतुलन तथा समायोजन की कमी हो सकता है। यदि यह शोध स्पष्ट करता है कि संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, तो विद्यालयों में संवेगात्मक बुद्धि के विकास हेतु विशेष कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा परामर्श सेवाओं का आयोजन किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा आधुनिक शिक्षा दर्शन भी विद्यार्थियों के सामाजिक–भावनात्मक विकास पर विशेष बल देते हैं। यदि विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास किया जाए, तो वे न केवल शैक्षिक रूप से सफल होंगे, बल्कि सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन में भी बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे। इसलिए यह अध्ययन शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक सिद्ध होगा।

संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन पर भी पड़ता है। जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, वे अध्ययन संबंधी चुनौतियों का सामना अधिक प्रभावी ढंग से करते हैं, अपने समय का उचित प्रबंधन करते हैं तथा परीक्षा संबंधी तनाव को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत, कम संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी छोटी–छोटी समस्याओं से भी विचलित हो सकते हैं, जिससे उनके शैक्षिक समायोजन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलेगी कि शैक्षिक सफलता में संवेगात्मक बुद्धि की क्या भूमिका है।

सामाजिक समायोजन की दृष्टि से भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है। विद्यालय जीवन में विद्यार्थियों को सहपाठियों, शिक्षकों तथा अन्य व्यक्तियों के साथ निरंतर संपर्क में रहना पड़ता है। अच्छे सामाजिक संबंध स्थापित करने के लिए भावनाओं की समझ, सहानुभूति, सहयोग तथा आत्मनियंत्रण आवश्यक होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि इन गुणों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि सामाजिक समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि का कितना योगदान है। यदि अभिभावक यह समझ सकें कि बच्चों की भावनात्मक क्षमताएँ उनके समायोजन को प्रभावित करती हैं, तो वे बच्चों के भावनात्मक विकास पर अधिक ध्यान देंगे। वे बच्चों के साथ सकारात्मक संवाद स्थापित करेंगे, उनकी भावनाओं को समझेंगे तथा उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। इससे विद्यार्थियों के पारिवारिक समायोजन में सुधार होगा। शिक्षक विद्यार्थियों के व्यवहार, भावनाओं तथा समायोजन संबंधी समस्याओं को समझकर उनके लिए उपयुक्त शिक्षण एवं मार्गदर्शन रणनीतियाँ विकसित कर सकते हैं। इससे विद्यालय में सकारात्मक वातावरण का निर्माण होगा तथा विद्यार्थियों की सीखने

की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनेगी। शिक्षक विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मनियंत्रण, सहानुभूति तथा सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए विशेष गतिविधियों का आयोजन कर सकते हैं।

परामर्शदाताओं एवं मनोवैज्ञानिकों के लिए भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण है। अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों की भावनात्मक समस्याओं की पहचान करने तथा उनके समाधान हेतु प्रभावी परामर्श कार्यक्रम विकसित करने में सहायता प्रदान करेंगे। इससे विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने में मदद मिलेगी तथा उनके समायोजन स्तर में सुधार किया जा सकेगा।

अंततः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन वर्तमान समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक, शैक्षिक तथा व्यक्तिगत विकास को समझने में सहायता प्रदान करेगा। इसके निष्कर्ष विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों, परामर्शदाताओं तथा शिक्षा–नीति निर्माताओं सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल शैक्षिक दृष्टि से बल्कि सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- पार्कर एवं सहयोगियों (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि उच्च होती है, वे विद्यालयी वातावरण में अधिक सफलतापूर्वक समायोजन स्थापित करते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अपेक्षाकृत अधिक होती है।
- न्यूसोम, डे तथा कैटानो (2000) ने अपने अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया तथा निष्कर्ष निकाला कि भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने की क्षमता व्यक्ति के सफल समायोजन में सहायक होती है।
- पेट्राइड्स एवं सहयोगियों (2004) ने यह प्रतिपादित किया कि संवेगात्मक बुद्धि मनोवैज्ञानिक समायोजन का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है तथा यह व्यक्ति को तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित व्यवहार करने में सहायता प्रदान करती है।
- बैस्टियन, बर्न्स तथा नेटलबेक (2005) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी सामाजिक सम्बन्धों को अधिक प्रभावशाली ढंग से संचालित करते हैं तथा उनका सामाजिक समायोजन बेहतर होता है।
- एक्सट्रेमेरा तथा फर्नांडीज–बेरोकल (2006) ने अपने अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि का मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समायोजन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- माव्रोवेली एवं सहयोगियों (2007) ने किशोर विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि उनके सामाजिक समायोजन, आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान को प्रभावित करती है।
- शर्मा (2011) ने निष्कर्ष निकाला कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले किशोरों का व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक संतोषजनक होता है।
- कौर (2012) ने विद्यालयी समायोजन के सन्दर्भ में अध्ययन करते हुए पाया कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों को विद्यालय की विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक समायोजन स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है।
- कुमार (2013) ने अपने अध्ययन में सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सम्बन्ध पाया।

- सिंह एवं मिश्र (2014) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि संवेगात्मक बुद्धि और समायोजन के मध्य उच्च स्तर का सहसम्बन्ध विद्यमान है तथा भावनात्मक रूप से सशक्त विद्यार्थी जीवन की चुनौतियों का अधिक प्रभावी ढंग से सामना करते हैं।
- यादव (2015) ने व्यक्तिगत समायोजन के क्षेत्र में संवेगात्मक बुद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया तथा पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में आत्मनियन्त्रण, आत्मविश्वास तथा अनुकूलन क्षमता अधिक विकसित होती है।
- शर्मा (2016) ने अपने अध्ययन में शैक्षिक समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया।
- कौर (2017) ने निष्कर्ष निकाला कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों का समायोजन व्यवहार अधिक संतुलित तथा प्रभावशाली होता है।
- वर्मा (2018) ने किशोर विद्यार्थियों में सामाजिक एवं व्यक्तिगत समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि के सकारात्मक प्रभाव को प्रमाणित किया।
- पटेल (2019) ने विद्यालयी जीवन में सफल समायोजन के लिए संवेगात्मक बुद्धि को एक आवश्यक कारक माना।
- कुमार (2020) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों में समायोजन सम्बन्धी समस्याएँ अपेक्षाकृत कम पाई जाती हैं।
- शुक्ला (2021), मेहता (2022), गुप्ता (2023) तथा खान (2024) के अध्ययनों में भी यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि विद्यार्थियों के पारिवारिक, सामाजिक, व्यक्तिगत एवं विद्यालयी समायोजन को सुदृढ़ बनाती है तथा उनके सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

समस्या कथन

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
- गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के 250 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

- संवेगात्मक बुद्धि को मापने हेतु – एस0के0 मंगल एवं शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित प्रशनावली का प्रयोग किया गया है।
- समायोजन को मापने हेतु – ए0के0पी0 सिनहा एवं आर0पी0 सिंह द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

चर	विद्यार्थियों की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि समायोजन	250	0.08	निम्न धनात्मक एवं असार्थक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य 0.08 का निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

तालिका संख्या – 2

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

च्र	छात्रों की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि समायोजन	130	0.06	निम्न धनात्मक एवं असार्थक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। तालिका के अनुसार छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य 0.06 का निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो सार्थक स्तर तक नहीं पहुँचता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका संख्या – 3

गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति एवं व्याख्या

चर	छात्राओं की संख्या	सहसम्बन्ध	परिणाम
संवेगात्मक बुद्धि समायोजन	120	0.09	निम्न धनात्मक एवं असार्थक सहसम्बन्ध

व्याख्या – तालिका संख्या 3 में गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। तालिका से ज्ञात होता है कि छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य 0.09 का निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध प्राप्त हुआ, जो सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं है। अतः छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

शोध निष्कर्ष

1. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य असार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य असार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
3. गोरखपुर जनपद के माध्यमिक स्तर की छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य असार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- बैस्टियन, वी. ए., बर्न्स, एन. आर., एवं नेटलबेक, टी. (2005). संवेगात्मक बुद्धि और जीवन कौशल के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ, 39(6), 1135–1145.
- एक्सट्रेमेरा, एन., एवं फर्नांडीज–बेरोकल, पी. (2006). विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ, 41(2), 321–330.
- कौर, एच. (2012). विद्यालयी समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 8(2), 45–52.
- कौर, जी. (2017). विद्यार्थियों के समायोजन व्यवहार पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 12(1), 56–63.
- खान, एस. (2024). माध्यमिक विद्यार्थियों के समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, समकालीन शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 18(2), 88–96.
- कुमार, ए. (2020). संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन, शैक्षिक मनोविज्ञान पत्रिका, 15(3), 62–70.
- कुमार, आर. (2013). सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध, भारतीय मनोवैज्ञानिक अध्ययन, 9(1), 34–41.
- गुप्ता, ए. (2023). किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव, भारतीय शिक्षा एवं विकास पत्रिका, 17(1), 71–80.
- न्यूसोम, एस., डे, ए. एल., एवं कैटानो, वी. एम. (2000). संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन एवं तनाव प्रबन्धन का अध्ययन, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ, 29(6), 1005–1016.
- पटेल, एच. (2019). विद्यालयी समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका, शैक्षिक अनुसन्धान पत्रिका, 14(2), 51–59.
- पार्कर, जे. डी. ए., समरफेल्ड्ट, एल. जे., होगन, एम. जे., एवं माजेस्की, एस. ए. (2004). शैक्षिक सफलता एवं समायोजन के सन्दर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ, 36(1), 163–172.
- पेट्राइड्स, के. वी., फ्रेडरिक्सन, एन., एवं फर्नहम, ए. (2004). गुणात्मक संवेगात्मक बुद्धि एवं मनोवैज्ञानिक समायोजन का अध्ययन, ब्रिटिश मनोविज्ञान पत्रिका, 95(2), 149–162.
- मेहता, आर. (2022). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 16(3), 77–85.

- माव्रोवेली, एस., पेट्राइड्स, के. वी., शॉवे, सी., एवं व्हाइटहेड, ए. (2007). किशोरों के सामाजिक समायोजन में संवेगात्मक बुद्धि की भूमिका, व्यक्तित्व एवं व्यक्तिगत भिन्नताएँ, 42(6), 1061–1072.
- यादव, एस. (2015). व्यक्तिगत समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, भारतीय शिक्षा समीक्षा, 10(2), 39–47.
- वर्मा, एन. (2018). किशोरों के सामाजिक एवं व्यक्तिगत समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव, शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल, 13(1), 48–56.
- शर्मा, एन. (2011). किशोर विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 7(3), 28–36.
- शर्मा, आर. (2016). शैक्षिक समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि का सम्बन्ध, भारतीय शिक्षा जर्नल, 11(2), 44–51.
- शुक्ला, पी. (2021). सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, समकालीन शिक्षा पत्रिका, 15(1), 59–67.
- सिंह, एस., एवं मिश्र, आर. (2014). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन, भारतीय मनोविज्ञान एवं शिक्षा पत्रिका, 10(2), 37–45.